M.A Sem III
CC-12

Topic — Aims & Objective of Education

पूर्ण रूप से संभव हो पाता है।

शिक्षा के उद्देश्य (Aims and Objectives of Education)

शिक्षा वस्तुतः मनुष्य के जीवन-व्यवहारों में सफल होने की सामर्थ्य प्रदान करने की एक सात्विक प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति समाज का एक उपयोगी प्राणी बन सके। जैसे-जैसे युग-विशेष की सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ परिवर्तित होती है, वैसे-वैसे शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन होता है।

प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सफल जीवन के चार चरम निर्धारित दृष्टि थे। जिसके संदर्भ में शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष प्रधान करना था। वैदिक काल के बाद ही शिक्षा धर्म-प्रधान हो चली और मुसलमानों के पदार्पण के बाद भी धर्म के निर्धारित दस लक्षणों में जीवन को नियोजित करना ही शिक्षा का उद्देश्य रहा। और, अंग्रेजों के पदार्पण के बाद शिक्षा के उद्देश्य-निर्धारण बहुत परिवर्तन हुआ। यूरोपीय भौतिकवादी (Materialist) सभ्यता में वैज्ञानिक अनुसन्धानों से भौतिकवादी शिक्षा को ही प्रश्रय मिला। इस प्रकार ब्रिटिशकाल में धर्म-प्रधान से अर्थ-प्रधान शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा।

अंग्रेजी शासनकाल में शिक्षा का उद्देश्य 3Rs अर्थात्

पढ़ना, लिखना और गणित सम्बन्धी ज्ञान (Reading, Writing & Arithmetic) करा देना ही निर्धारित हुआ। गुलामों को अपने उपयोग के अनुकूल बनाने के लिए शिक्षा के उद्देश्य को लिखना, पढ़ना तथा गणित तक ही सीमित रख गया। मेकाले ने सर्वप्रथम इसकी बुनियाद रखी और बाद के अंग्रेज शिक्षाशास्त्रियों (Educationists) ने इसके पोषण के लिए विभिन्न समर्थक सूत्रों (formulas) को उपस्थित किया। अंग्रेजों के शासनकाल में इतना तो अवश्य लाभ हुआ कि वैज्ञानिक आविष्कारों (Scientific inventions) के सम्पर्क में आने का सुअवसर मिला और अपने आपको समझने तथा मूल्यांकन के तरीकों में हमारी वैज्ञानिक दृष्टि खुली और अपने प्राचीन सिद्धांतों को भी हमने वैज्ञानिक दृष्टि में विश्व के कसौटी पर कसना आरंभ कर दिया। John Dewey, Froebel, Pestalozzi आदि
डवी फ्रोबेल पेस्टालॉजी
यूरोपीय शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों ने हमारा मार्ग-दर्शन किया। हमने ब्रिटिशकालीन शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य (3Rs) को थोड़ा समझा और राष्ट्रपिता बापू के जीवन-दर्शन की छाया में 4Hs (Head, Hand, Heart & Health) अर्थात बच्चों के मानसिक, कलात्मक, आध्यात्मिक तथा शारीरिक विकासों को शिक्षा का उद्देश्य माना।

शिक्षा के इन उद्देश्य (4Hs) के माध्यम से बालकों की क्षमताओं को समाज-उपयोगी धाराओं में मोड़ कर, ऐसे व्यक्तित्व-निर्माण पर जोर दिया गया, जिसे वे अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर आदर्श समाज के निर्माण तथा उसके अंग-प्रत्यंग को सफल बनाने में हाथ बटा सके। इसके अतिरिक्त बालकों की वैयक्तिक भिन्नता (Individual difference) को ध्यान में रखकर 3As (Age, Ability & Aptitude) अर्थात आयु, योग्यता तथा रुझान को महत्व दिया गया। इस प्रकार शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रमुख स्थान हो चला। मनोविज्ञान का प्रवेश होते ही शिक्षा के उद्देश्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ और बालकों का सर्वांगीण विकास शिक्षा का उद्देश्य बना। आज प्रजातन्त्रात्मक सामाजिक धारा के समक्ष शिक्षा के उद्देश्य में व्यक्ति के समाजीकरण (Socialisation) का दायित्व स्वतः आ गया है।

(3)

आधुनिक शिक्षा के उद्देश्य (Aims of modern education)

शिक्षा के उद्देश्य के सम्बन्ध में विभिन्न कालों में शिक्षा के बदलते हुए मूल्य (values) के साथ-साथ शिक्षा के उद्देश्य में ~~किस प्रकार~~ परिवर्तन होते रहे हैं। आधुनिक शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

(1) मानसिक विकास (Mental development) :—

शिक्षा का एक प्रधान उद्देश्य बालकों का पूर्ण तथा समुचित मानसिक विकास है। मानसिक विकास का तात्पर्य मानसिक क्षमताओं तथा प्रवृत्तियों (Tendencies) के विकास से है। बौद्धिक योग्यता (intellectual capacity) के साथ-साथ चिन्तन, स्मरण, चिन्तन, कल्पना आदि से सम्बद्ध अनेक मानसिक क्षमताएँ बच्चों में बीजरूप में निहित होती हैं। शिक्षा का उद्देश्य इन्हीं क्षमताओं के स्वाभाविक तथा विरोधहीन विकास में सहायता करना है। इसी तरह बालकों की मूलप्रवृत्तियों का उन्नयन (Sublimation) करना भी शिक्षा का अभिप्राय है।

(2) शारीरिक विकास (Physical development) —

शिक्षा का दूसरा उद्देश्य बालकों का शारीरिक विकास है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। अतः बालकों को मन से स्वस्थ बनाने के लिए उन्हें तन से भी स्वस्थ बनाना जरूरी है। मानसिक विकास तथा शारीरिक विकास के बीच बहुत कम सहसम्बन्ध होता है। फिर भी मानसिक क्षमताओं के पूर्ण एवं समुचित विकास में स्वस्थ शरीर काफी सहायक होता है। इसलिए, आज की शिक्षा जहाँ बालकों की मानसिक क्षमताओं के पूर्ण विकास के लिए अनुकूल वातावरण उपस्थित करती है, वहाँ उनके शारीरिक विकास के लिए भी खेल-कूद, व्यायाम, प्राकृतिक वातावरण आदि पर जोर देती है।

(3) हृदय पक्षीय विकास (Development of heart) :—

शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य बालकों की हृदय-पक्षीय क्षमताओं को उभारना तथा अनुकूल दिशा में विकसित होने में सहायता करना भी है। संगीत, चित्रकारी, नृत्य (Dance), सौन्दर्यानुभूति (Aesthetic experience) आदि हृदय-पक्षीय गुणों को विकसित करना भी आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य है।

(4)

(4) हस्तकला का विकास (Development of manual dexterity) — आज की शिक्षा मूलतः व्यावहारिक हो चली है। आधुनिक शिक्षा बालकों के हस्तकौशल को विकसित करना चाहती है। अतः शिक्षा का एक प्रधान उद्देश्य बालकों के हस्तकौशल को उनकी योग्यता, अभिरुचि एवं मनोवृत्ति के अनुकूल विकसित करके उन्हें इस योग्य बना देना है कि वे अपने जीवन में अभियोजित हो सकें। सिलाई, बुनाई, आदि शिक्षा इसी संदर्भ में दी जाती है। विभिन्न प्रकार के यंत्रों के निर्माण, गृहविज्ञान (Domestic Science) की सार्थकता तथा प्रकृति-प्रदत्त सारे तत्वों को जीवन-उपयोगी बनाने की चेष्टा के माध्यम से शिक्षा के इसी उद्देश्य की पूर्ति होती है।

(5) संवेगात्मक विकास (Emotional development) — शिक्षा का उद्देश्य बालक को संवेगात्मक रूप से भी परिपक्व बनाना है। भय, क्रोध तथा प्रेम तीन प्राथमिक संवेग (Primary emotions) माने जाते हैं। शैक्षिक दृष्टि से इन संवेगों का समुचित विकास अति आवश्यक है। प्राचीनकाल में शिक्षा का आधार भय माना गया। विभिन्न प्रकार से बालकों को भयभीत करके शिक्षा देने का प्रयत्न किया जाता था। लेकिन, आज का उद्देश्य भय को समाप्त करके प्रेम तथा स्नेह के माध्यम से बालकों को शिक्षित करना है। जिन बालकों में संवेगात्मक अस्थिरता (emotional instability) होगी उन्हें समुचित ढंग से शिक्षित करना कठिन होगा। अतः आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य बालकों के लिए शिक्षा के माध्यम से एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करना है, जिससे उन में संवेगात्मक परिपक्वता के साथ-साथ उनके संवेगों का विकास भी हो सके।

(6) सामाजिक विकास (Social development) — शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य बालकों का सामाजिक विकास है। सामाजिक विकास का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुकूल अपने सामाजिक वातावरण में इस प्रकार अभियोजित हो जाय जिससे वह तथा उसका समाज दोनों लाभान्वित हो सकें। क्रो तथा क्रो ने समाजीकरण को शिक्षा का एक प्रधान उद्देश्य बताया है। शिक्षा बालकों की मनोवृत्ति (attitude)

तथा चिन्तन-धारा को इस रूप में परिवर्तित करना चाहती है, जिससे बालक की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ सामाजिक कल्याण भी हो सके।

इस प्रकार शिक्षा के कई उद्देश्य है। Sorenson, (1958) के अनुसार — "आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए तथ्यों, कौशलों तथा विचारों में निपुणता प्रदान करना, समस्या-समाधान-विधियों को विकसित करना तथा सहकारी समूह-व्यवहार की ओर उसे उत्प्रेरित करना है।"